Toppersnotes
Unleash the topper in you

SSC-CPO

कर्मचारी चयन आयोग- केंद्रीय पुलिस संगठन

भारतीय इतिहास एवं संस्कृति

तथा

राजव्यवस्था

SIERRA INNOVATIONS

भारत का इतिहास

प्राचीन भारत का इतिहास

(1) सिन्धु घाटी सभ्यता 1
(2) वैदिक काल (साहित्य) 9
(3) धार्मिक आन्दोलन (बौद्धधर्म एवं जैन धर्म) 16
(4) महाजनपद काल 25
(5) मौर्य वंश 29
(6) मौर्योत्तर काल 40
(7) गुप्त वंश 47
(8) गुप्तकालीन प्रशासनिक व्यवस्था 50

मध्यकालीन भारत का इतिहास

(1) इस्लाम एवं शासक 56
(2) भारत पर अरब आक्रमण 59
(3) सल्तनत काल (गुलाम वंश) 60
(4) खिलजी वंश 64
(5) तुगलक वंश 69
(6) सैय्यद वंश 74
(7) लोदी वंश 75
(8) सल्तनतकालीन प्रशासन एवं स्थापत्य कला 76
(9) मुगल काल (बाबर) 84
(10) हुमायूँ 86
(11) शेरशाह सूरी 87
(12) अकबर 90
(13) जहाँगीर 95
(14) शाहजहाँ 97
(15) औरंगजेब 100
(16) मुगलकालीन प्रशासन एवं कला 103
(17) विजयनगर साम्राज्य 113
(18) विजयनगर साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था 117
(19) बहमनी साम्राज्य 119
(20) सूफीवाद 121

आधुनिक भारत का इतिहास

(1) भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन 124
(2) बंगाल एवं प्लासी का युद्ध 132
(3) लॉर्ड वैलेजली की सहायक संधि प्रथा एवं भू-राजस्व पद्धतियां 134
(4) प्रमुख युद्ध एवं संधियां 137
(5) भारत के गवर्नर जनरल एवं उनके कार्य 138
(6) भारत के वायसराय एवं उनके कार्य 146
(7) 1857 की क्रान्ति 151
(8) सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आन्दोलन 157
(9) राष्ट्रीय आन्दोलन 163
(10) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 165
(11) 1909 का भारत परिषद् अधिनियम (मार्ले-मिन्टो सुधार) 170
(12) राष्ट्रीय आन्दोलन का तृतीय चरण (1919-1947) 172
(13) भारत सरकार अधिनियम - 1935 183
(14) अगस्त प्रस्ताव - 1940 184
(15) व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन 185
(16) भारत छोडो आन्दोलन 186
(17) भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 189
(18) भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन 190
(19) प्रमुख व्यक्तित्व 195
(20) भारत का संवैधानिक विकास 197

भारतीय कला एवं संस्कृति

(1) भारतीय संस्कृति का परिचय 202
(2) विरासत 203
(3) इण्डो इस्लामिक स्थापत्य कला 209
(4) शिल्पकला 214
(5) मूर्तिकला 216
(6) वस्त्रनिर्माण 218
(7) चित्रकला 220
(8) नृत्यकला 225
(9) रंगमंच 228
(10) साहित्य 230

भारत का संविधान

(1) संविधान सभा 236
(2) भारतीय संविधान के स्त्रोत 239
(3) अनुसूचियाँ 241
(4) संविधान के भाग 243
(5) प्रस्तावना 244
(6) भाग – 1 संघ एवं उसके राज्य क्षेत्र 247
(7) नागरिकता 250
(8) मूल अधिकार 252
(9) राज्य के नीति निदेशक तत्व 266
(10) मौलिक कर्त्तव्य 267
(11) संघ की कार्यपालिका 270
- राष्ट्रपति 270

(12) उपराष्ट्रपति 277
(13) प्रधानमंत्री मंत्रिमण्डल 280
(14) संसद 284
(15) सर्वोच्च न्यायालय 300
(16) भारत का नियंत्रक एवं महालेखा परिक्षक 304
(17) राज्य की कार्यपालिका (भाग–6) 305
- राज्यपाल 306

(18) राज्य का विधानमंडल 307
(19) उच्च न्यायालय 308
(20) भारत में संवैधानिक एवं गैर संवैधानिक आयोग 313
(21) आपातकालीन उपबंध 316
(22) केन्द्र एवं राज्य सम्बन्ध 323
(23) पंचायतीराज 330
(24) संविधान संशोधन (अनुच्छेद 368) 334

भारत का इतिहास

प्राचीन काल में भारत

सिन्धु घाटी सभ्यता

- इसे "हडप्पा सभ्यता" भी कहा जाता है ।
- यह कांस्ययुगीन सभ्यता थी ।
- यह विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओ मे से एक है । उत्कृष्ट नगर व्यवस्था एवं जल निकासी व्यवस्था इसको विशिष्ट बनाती है ।
- चार्ल्स मेसन – 1826 ई. सबसे पहले सभ्यता की ओर ध्यान आकर्षित किया ।
- जॉन बर्टन व विलियम बर्टन – 1856 ई हडप्पा नगर का सर्वे किया ।
- सर जॉन मार्शल (ASI – महानिदेशक) – 1921 ई पूर्व
  इन्होने दयाराम साहनी को हडप्पा मे उत्खनन करने के लिए नियुक्त किया ।
- कालक्रम – 2600 से 1900 B.C. (New Ncert) | रेडियो कार्बन (C^{14})
  2250 से 1750 B.C. (Old Ncert)
- <u>विस्तार</u> –

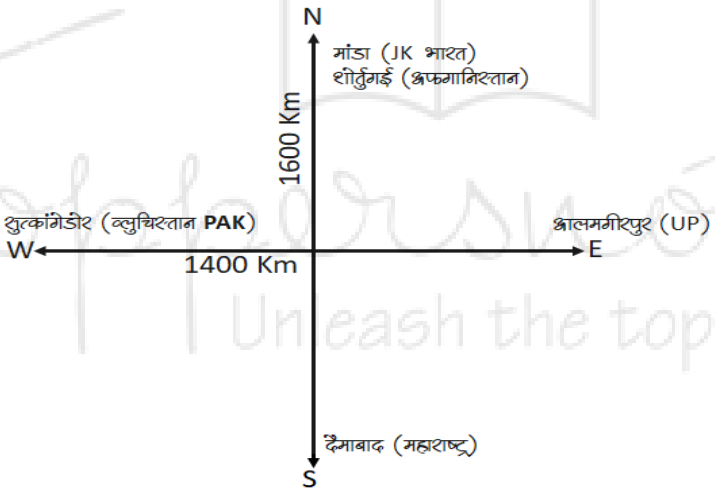

- पिग्गट ने हडप्पा एवं मोहनजोदडो को सिन्धु सभ्यता की जुँडवा राजधानी बताया है ।
- धोलावीरा एवं राखीगढी भारत में सबसे पुरातन स्थल है ।
- आजादी के समय अधिकांश पुरास्थल पाकिस्तान मे चले गये ।
- बडे नगर (पाकिस्तान)
  गनेडीवाल
  हडप्पा
  मोहनजोदडों

नगर नियोजन –

- उत्कृष्ट नगर व्यवस्था
  सिन्धु घाटी के समकालीन सभ्यताओ मे इस विशेषता का अभाव ।
- नगर ग्रिड पद्धति पर आधारित थे अर्थात शतरंज के बोर्ड की तरह सभी नगरों को बसाया था । सभी मार्ग समकोण पर काटते थे ।
- सबसे चौडी सडक 34 फिट की मिलती है जो सम्भवतः राजमार्ग रहा होगा ।
- घरो मे उत्कृष्ट नाली व्यवस्था (जल निकासी हेतु)
- बडी नालियो को ढक कर रखते थे ।
- भवन के अन्दर सामान्यतः 3 या 4 कक्ष, रसोईघर, 1 विद्यालय स्नानागार एवं कुआं होता था ।
- कालीबंगा से अलंकृत ईंटें प्राप्त होती है ।
  कच्ची एवं पक्की ईंटो का प्रयोग करते थे ।
  ईंट का आकार – 1 : 2 : 4
- कालीबंगा से लकडी की नालियों के साक्ष्य मिलते है ।
- नगर 2 भागों मे बाँटा हुआ होता था । पहला भाग – दुर्गीकृत होता था (शासक वर्ग)
  तथा दूसरा भाग सामान्य । (मजदूर, कारीगर, व्यापारी आदि)

- राजनीतिक व्यवस्थाः –
  ज्यादा जानकारी नहीं है । सम्भवतया पुरोहित राजा (Prist King) या व्यापारी वर्ग के हाथ में शासन व्यवस्था रही होगी पिग्गट ने ------- जुडवा राजधानी --- ।

- आर्थिक व्यवस्था –

कृषि

- खेती व्यवस्था – प्रमुख कार्य
- कालीबंगा से जुते हुए खेतों के साक्ष्य मिले है ।
  एक साथ दो – दो फसल बोने के साक्ष्य मिले है (कालीबंगा)
- गेहूँ मटर, जौ, तिल, मोटा अनाज (ज्वार), रागी का प्रयोग करते थे ।
- उत्तर हडप्पा काल मे चावल के साक्ष्य भी मिलते है । लोथल से चावल के दाने एवं रंगपुर से चावल की भूसी मिली है ।
- सिंचाई (कुँओ एवं) नदियो के माध्यम से होती थी ।
- नहरों के साक्ष्य भी मिलते है – शौर्तुगई (AF) (OXUS नदी के किनारे स्थित)
- धौलावीरा से कृत्रिम जलाशय के साक्ष्य मिले है । सम्भवतः नहरो के माध्यम से सिंचाई करते थे ।
- अधिशेष उत्पादन (Surplus Production) होता था । हडप्पा तथा मोहनजोदडो से विशाल अन्नागार के साक्ष्य मिलते है।

पशुपालन

- बैल, भैंस, बकरी, भेड, खरगोश, कुत्ता आदि पालतु पशु थे ।
- मोहरो पर कूबड वाले बैल का अंकन बहुत अधिक मिलता है ।
- घोडे एवं ऊँट से ज्यादा परिचित नहीं थे । सुरकोटडा से घोडे की अस्थियाँ मिलती है ।

उद्योग

- चुन्हुदडों एवं लोथल से मनके बनाने का कारखाना मिलता है ।
- चाक पर बर्तन बनाने का कार्य होता था ।
- बर्तनों को आग से पकाते भी थे ।
- भट्टे के साक्ष्य भी मिलते हैं । कच्ची व पक्की ईंटो का प्रयोग होता था ।
- लकडी के कारखाने भी थे ।
- सोना, चाँदी, ताँबा, टिन आदि से परिचित थे । (ताँबा + टिन = कांस्य)
- बहुमूल्य पत्थर "कार्नेलियोन" का प्रयोग भी करते थे ।

धार्मिक स्थिति – (धार्मिक जीवन)

- बहुदेववाद में विश्वास रखते थे ।
- मूर्तिपूजा करते थे ।
- मन्दिरो के साक्ष्य नहीं मिलते ।
- अग्निकुण्ड प्राप्त होते हैं ।
- मातृदेवियों की मूर्तियाँ मिलती है ।
- पशुपतिनाथ की मोहर प्राप्त होती है । इस मोहर पर बाघ, हाथी, बैल, गैंडा व हिरण के चित्र मिलते हैं सर जॉन मार्शल ने सर्वप्रथम इसे पशुपतिनाथ कहा था ।
- आत्मा की अमरता मे विश्वास रखते थे ।
- हडप्पा से स्वास्तिक का चिह्न प्राप्त होता है ।
- लिंगपूजा, योनिपूजा, वृक्ष पूजा मे विश्वास रखते थे ।
- बलि प्रथा का अनुमान भी – जैसे – चन्हूदडों की मुहर पर बलि के दृश्य
- वृक्ष, पशु, साँप, पक्षी आदि की भी पूजा, सूर्य पूजा
- पुनर्जन्म मे विश्वास – 3 तरह के दाह संस्कार
- हडप्पा से एक मृण्मूर्ति के गर्भ से एक पौधा निकला दिखाया गया है, जो उर्वरता की देवी का प्रतीक है

सामाजिक स्थितिः –

- मातृसत्तात्मक संयुक्त परिवार होते थे ।
- समाज संभवतः 4 भागों मे विभाजित था –
  - (i) पुरोहित वर्ग
  - (ii) व्यापारी वर्ग
  - (iii) किसान वर्ग
  - (iv) श्रमिक वर्ग
- बडी मात्रा मे मातृदेवियों की मूर्ति मिलती है ।

- यह शान्तिप्रिय लोग थे क्योंकि अत्यन्त कम मात्रा मे हथियार मिलते हैं ।
- पुरूष एवं महिलाएँ शृंगार करते थे एवं जवाहरात पहनते थे ।
- लोग शाकाहारी व माँसाहारी थे ।
- शतरंज एवं मुर्गे की लडाई इनके प्रिय खेल थे ।
- अन्तिम संस्कार की तीनों विधियों का प्रचलन था –
  - (i) पूर्ण शवाधान
  - (ii) आंशिक शवाधान
  - (iii) दाह संस्कार
- यह आत्मा व पुनर्जन्म मे विश्वास करते थे ।
- लोथल से 3 व कालीबंगा से एक युग्मित शवाधान मिलता है ।

आर्थिक स्थिति/व्यापार: –

- कृषि आधारित अर्थव्यवस्था थी ।
- अधिशेष उत्पादन होता था जिन्हे बडे बाजारों/शहरों मे बेचा जाता था ।
- गेहूँ, सरसों, चना, मटर, रागी प्रमुख फसलें थी ।
- इन्हें चावल एवं बाजरे का ज्ञान नहीं था ।
- लोथल से चावल के साक्ष्य मिलते है ।
- रंगपुर से चावल की भूसी मिलती है ।
- रंगपुर उत्तर हडप्पा स्थल है ।
- शोर्तुगई (अफगानिस्तान)Oxus River के किनारे से नहरों के साक्ष्य मिलते है ।
- धौलावीरा से जलाशय के साक्ष्य मिलते है ।
- यह पशुपालन भी करते थे ।
- गाय, भैंस, भेड, बकरी, खरगोश, कुत्ता एवं बिल्ली इनके प्रिय पशु थे ।
- यह ऊँट, घोडा, हाथी से परिचित नहीं थे ।
- विदेशी व्यापार होता था ।
- सारगोन अभिलेख मे सिन्धु घाटी सभ्यता को "मेलुहा" कहा गया है ।
- मेलुहा हाजा (मोर) पक्षी के लिए प्रसिद्ध है ।
- सारगोन अभिलेख में कपास को सिण्डन कहा गया है ।
- कपास की विश्व मे प्रथम खेती भारत में हुई ।
- दिलमून (बहरीन) व आखन (ओमान) मध्यस्थ का कार्य करते थे ।
- मुद्रा व्यवस्था का प्रचलन नहीं था ।
- वस्तु विनिमय होता था ।
- यह सोने व चाँदी का प्रयोग करते थे ।
- लोहे से परिचित नहीं थे ।
- ताँबा + टिन = कांस्य
- बालाकोट (PAK) से शंख उद्योग के अवशेष मिलते है ।
- माप की दशमलव प्रणाली
- भारत को नाविकों का देश कहा

मूर्तियों एवं मुहरेः –

- यहाँ से 3 तरह की मूर्तियाँ मिलती है –
  1. धातु की
  2. पत्थर की
  3. मिट्टी की (टेराकोटा)
- मोहनजोदडो से नर्तकी की मूर्ति (धातु की)
- दैमाबाद से धातु का रथ
- मोहनजोदडों से पत्थर की पुरोहित राजा की मूर्ति
- टेराकोटा की मातृदेवियों की मूर्तियाँ
- ज्यादातर मुहरें शैलखडी की बनी हुई है ।
- ज्यादातर मुहरें चौकोर हुआ करती थी ।
- मुहरे वस्तुओं की गुणवत्ता एवं व्यक्ति की पहचान की द्योतक होती थी ।
- (I) मुहरों पर एकसिंगा (एकशृंगी – सबसे ज्यादा)
- मोहनजोदडों व हडप्पा से बडी मात्रा में मुहरें प्राप्त होती है ।
- (II) कूबड वाला सांड के चित्र

1. हडप्पाः –

पाकिस्तान के पंजाब के मोंटगोमरी जिले मे स्थित (अब – शाहीवाल जिले मे)
रावी नदी के तट पर

- उत्खननकर्ता – दयाराम साहनी
- रावी नदी के तट पर श्रमिको के आवास एवं अन्नागार मिलते है ।
- R – 37 नामक कब्रिस्तान मिलता है । एक शव को ताबूत मे दफनाया गया है, इसे विदेशी की कब्र कहते है ।
- यहाँ से इक्का गाडी प्राप्त होती है । (पश्चिम मे विशाल दुर्ग)
- शृंगार पेटी प्राप्त होती है ।
- टीले पर निर्मित – व्हीलर ने "माउण्ट A – B" कहा ।

2. मोहनजोदडो : –

स्थिति = लरकाना (सिन्ध, PAK)
सिन्धु नदी के तट पर
उत्खननकर्ता = राखालदास बनर्जी

– मोहनजोदडो का शाब्दिक अर्थ = मृतकों का टीला (सिन्धी भाषा)

(i) विशाल स्नानागार –

(a) आकार :– 39×23×8 ft
(b) इसके उत्तर व दक्षिण मे सीढियाँ बनी हुई है ।
(c) इसमें बिटुमिनस का लेप किया गया है ।

(d) इसके उत्तर दिशा मे 6 वस्त्र बदलने के कक्ष है ।
(e) तीन तरफ बरामदे है ।
(f) बरामदे के पीछे कई कक्ष बने हुए है ।
(g) जलापूर्ति हेतु कुँआ भी बना हुआ है ।
(h) सीढियों के साक्ष्य भी मिलते है ।
(i) प्रथम तल पर सम्भवतया पुरोहित रहते होंगे ।
(j) सम्भवतया यहाँ धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता रहा होगा ?
(k) सर जॉन मार्शल ने इसे तात्कालिक समय की आश्चर्यजनक इमारत कहा है ।

(ii) विशाल अन्नागार
(iii) महाविद्यालय के साक्ष्य
(iv) सूती कपडे के साक्ष्य
(V) हाथी का कपालखण्ड
(vi) नर्तकी की मूर्ति जो धातु की बनी हुई है ।
(a) यह नग्न है ।
(b) इसने एक हाथ मे चूडियाँ पहन रखी है ।
(vii) पुरोहित राजा की मूर्ति जो ध्यान की अवस्था में है ।
(a) इसने शॉल ओढ रखी है जिस पर कशीदाकारी का कार्य किया गया है ।
(viii) यहाँ से मेसोपोटामिया की मुहर मिलती है ।

3. <u>लोथल</u> :-

स्थिति = गुजरात

- भोगवा नदी के किनारे

उत्खननकर्ता = S. R. राव (रंगनाथ राव)
→ यह एक व्यापारिक नगर था ।
(i) यहाँ से गोदीवाडा (Dockyard) मिलता है ।
(a) यह सिन्धु घाटी सभ्यता की सबसे बडी कृति है ।
(ii) मनके (Bead) बनाने का कारखाना
(iii) चावल के साक्ष्य
(iv) फारस की मुहर जो गोलाकार बटननुमा है ।
(v) घोडे की मृण्मूर्तियाँ
(vi) चक्की के दो पाट
(vii) घरों के दरवाजे मुख्य मार्ग पर खुलते है (एकमात्र)
(viii) छोटे दिशा सूचक यंत्र

4. सुरकोटडा / सुरकोटदाः -

स्थिति = गुजरात

(i) घोडे की हड्डियाँ

- सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगो को घोडे का ज्ञान नहीं था ।

5. कुनाल (HR)

- चाँदी के दो मुकुट

6. रोजदी (गुजरात)

- हाथी के साक्ष्य

7. रोपड (PB)

मनुष्य के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य

8. धौलावीरा

गुजरात - कच्छ जिला (किसी नदी तट पर नहीं)

उत्खननकर्त्ता - रविन्द्र सिंह विष्ट (1990 में)

- यह सबसे नवीन नगर है जिसका उत्खनन किया गया ।
- कृत्रिम जलाशय के साक्ष्य । संभवतः नहरों के माध्यम से खेती करते होंगे । (दुर्गाभाग, मध्यम नगर, निचला)
- यह नगर 3 भागों में बंटा हुआ था ।
- स्टेडियम एवं सूचना पट्ट के अवशेष मिलते हैं । (खेल का मैदान)
- सिंधु लिपि के 10 बडे चिह्नों से निर्मित शिलालेख

9. चन्हुदडों

उत्खननकर्त्ता - एन. मजूमदार (डाकूओं ने हत्या कर दी) - अर्नेस्ट मैके

- मनके बनाने के कारखाने (मणिकारी), मुहर बनाने का काम आदि ।
- औद्योगिक नगर
- कुत्ते द्वारा बिल्ली का पीछा करने के साक्ष्य मिले ।
- वक्राकार ईंटे मिली है ।

10. दैमाबाद

- रथ मिले है ।

हडप्पा लिपि

- लगभग 64 मूल चिह्न व 400 तक अक्षर
- इन्हें लिपि का ज्ञान था

- दायीं से बायीं ओर लिखते थे ।
- गोमूत्राक्षर लिपि एवं भाव-चित्रात्मक लिपि थी ।
- 375 से 400 तक भाव एवं शब्दों का प्रयोग करते थे ।
- एक लेख पर सर्वाधिक 16 शब्द व भावों का प्रयोग किया गया है ।
- मछली का प्रयोग Max तथा "U" आकार भी अधिक

पतन के कारण

- गार्डन चाइल्ड तथा व्हीलर के अनुसार आर्यो का आक्रमण
- रंगनाथ राव तथा सर जॉन मार्शल – बाढ
- लोम्बिरिक-सिंधु नदी का मार्ग बदलता
- आरस्टाईन एवं अमलानंद घोष-जलवायु परिवर्तन
- जॉन मार्शल-प्रशासनिक शिथिलता

निष्कर्ष

हडप्पा या सिंधुघाटी सभ्यता एक विशाल व विस्तृत सभ्यता थी, अतः इसके पतन के लिए कोई एक कारण उत्तरदायी नहीं हो सकता है ।

प्राचीन अवशेषों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अपने अंतिम समय में यह पतनोन्मुख रहीं । अंततः द्वितीय सहस्त्राब्दी ई.पू. के मध्य इस सभ्यता का पूर्णतः विनाश हो गया । इस सभ्यता का क्रमिक पतन हुआ तथा यह नगरीय सभ्यता से ग्रामीण सभ्यता में पहुंच गयी ।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

वैदिक काल (साहित्य)

1500 – 600 BC

1. वेद ⇒ श्रुति
2. ब्राह्मण ⇒
3. आरण्यक ⇒
4. उपनिषद ⇒ वेदान्त

} वैदिक साहित्य

(1) वेदांग
(2) धर्मशास्त्र
(3) महाकाव्य
(4) पुराण
(5) स्मृतियाँ

} वैदिक साहित्य का अंग नहीं है ।

वेद –

- वेद का शाब्दिक अर्थ ज्ञान होता है ।
- वेदों का संकलन कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने किया ।
- वेदों की रचना आर्यो ने की ।
- आर्य का शाब्दिक अर्थ = श्रेष्ठ/कुलीन
- वेदों का नित्य, प्रामाणिक एवं अपौरूषेय माना जाता है ।
- वैदिक मन्त्रों की रचना करने वाले ब्राह्मणों को दृष्टा कहते है ।
- वैदिक मन्त्रों की रचना करने वाली महिलाओं को ऋषि कहा जाता था ।
- वेद 4 है –

ऋग्वैदिक काल	उत्तरवैदिक काल
(1500 – 1000BC)	(1000 – 600BC)

ऋग्वैदिक काल (1500 – 1000 BC)

- आर्य का शाब्दिक अर्थ – भद्रजन, श्रेष्ठ, उत्तम, कुलीन
- आर्यो का निवास स्थान –
  (i) बाल गंगाधर तिलक – "आर्कटिक होम ऑफ वेदाज"
  "गीता रहस्य"
  आर्यिऑन / ऑर्योन
  (पुस्तके)

इस पुस्तक मे उत्तरी ध्रुव को आर्यो का निवास स्थान बताया ।

(ii) दयानन्द सरस्वती – तिब्बत को आर्यो का स्थान बताया ।

(iii) डॉ. पेन्का – जर्मनी को बताया ।

(iv) मेक्स म्युलर – मध्य एशिया – बैक्ट्रिया
सर्वाधिक मान्य मत

आर्यो का भौगोलिक विस्तार :-

- ऋग्वेद में सबसे ज्यादा सिन्धु नदी का उल्लेख मिलता है ।
- सरस्वती सबसे पवित्र नदी थी । (देवीतमा, मातेतमा, नदीतमा)
- गंगा व सरयू का उल्लेख 1 – 1 बार "मुजवन्त"
- यमुना का उल्लेख 3 बार
- "भुजवन्त" नामक पहाडी चोटी का उल्लेख – जो कि हिमालय है ।
- सोम का निवास स्थान – भुजवन्त
- पंजाब की नदियों का उल्लेख मिलता है ।
  झेलम – वितस्ता, चिनाब – अस्किनी, सतलज – सतुद्री, व्यास – बिपाशा, रावी – पुरूषणी
- अफगानिस्तान की नदियों का उल्लेख

आर्यो की राजनैतिक स्थिति :-

- राजा का पद वंशानुगत नहीं होता था ।
- राजा को गोप / जनस्य गोप कहा जाता था ।
- राजा का पद गरिमामयी नहीं होता था ।
- कालान्तर (ऋग्वैदिक काल का अन्तिम समय) में गोप का पद वंशानुगत हो गया था ।
- राजा के पास स्थायी सेना नहीं होती थी ।
- अधिकतर लडाईयाँ जानवरों (गायों व घोडा) के लिए लडी जाती थी ।

- राजा की सहायता हेतु कुछ संस्थाएँ होती थी –

(1) <u>विदथ</u> –
- प्राचीनतम संस्था
- यह धन का बँटवारा करती थी (लूट)

(2) <u>सभा</u> –
- वरिष्ठ एवं कुलीन लोगों का समूह
- ऋग्वेद मे 8 बार इसका उल्लेख किया गया है ।

(3) <u>समिति</u> –
- जनप्रतिनिधियों का समूह
- ऋग्वेद में 9 बार इसका उल्लेख किया है ।
- स्पश = गुप्तचर
- राजा की सहायता हेतु 12 मन्त्री होते थे जिन्हे रत्निन (रत्नि) कहा जाता था ।
- ब्राजपतिः – गोचर भूमि का प्रमुख
- बलिः – राजा को दिया जाने वाला स्वैच्छिक कर
- राजनैतिक इकाईयाँ –
  (1) जन – गोप
  (2) विश – विशपति
  (3) ग्राम – ग्रामणी
  (4) कुल – कुलुप
- महिलाएँ भी सभा मे हिस्सा लेती थी ।

<u>आर्थिक जीवन</u> –

- आय का स्त्रोत/ प्रमुख पेशा – पशुपालन
- गाय व घोडा – प्रिय पशु
- कृषि (स्थायी कृषि) नहीं करते थे । ऋग्वेद मे कृषि का उल्लेख 3 बार मिलता है ।
- मुद्रा प्रणाली नहीं । वस्तु विनिमय के माध्यम से व्यापार
- मुद्रा के रूप मे गाय व निस्क का प्रयोग । (प्रारम्भ मे आभूषण)
- अयस शब्द – संभवतः ताँबे या काँसे के लिए / लोहे से परिचित नहीं
- कपास का उल्लेख नहीं

<u>सामाजिक जीवन</u>

- पितृसतात्मक संयुक्त परिवार
- समाज 3 वर्णो मे विभक्त – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य
- शुद्रो का अस्तित्व नहीं था ।
- ऋग्वेद के 10वें मण्डल मे पुरूष सूक्त में क्षुद्र शब्द का उल्लेख । लेकिन यह बाद में जोडा गया था ।
- वर्ण व्यवस्था – कर्म आधारित अर्थात् व्यक्ति वर्ण बदल सकता था ।

- महिलाओं को सभा व समिति मे हिस्सा लेने का अधिकार था ।
- महिलाओ को शिक्षा का अधिकार था ।
- महिलाओं ने ऋग्वेद के कुछ मंत्रों का रचना भी की थी ।
- कुछ विदुषी महिलाओं की जानकारी
  लोपामुद्रा, घोषा, शिकता, अपाला, विश्वरा, काक्षावृति
- "विषफला" नामक योद्धा महिला का उल्लेख ।
- जो महिलाएँ अविवाहित होकर अध्ययन करती थी, उन्हे "अमाजु" कहा जाता था ।
- बहुपत्नी प्रथा का प्रचलन ।
- विधवा विवाह होता था ।
- सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह का प्रचलन नहीं था ।
- "नियोग प्रथा" का प्रचलन था ।
- दहेज को "वहतु" कहते थे ।
- घरेलु दास होते थे ।
- विराट पुरूष के मुख से ब्राह्मण, क्षत्रिय भुजाओ से, वैश्य जाँघो से एवं शुद्र पैरों से उत्पन्न हुए है ।
- आर्यो के वस्त्र सूत, ऊन एवं चर्म के बने होते है ।
- भिष्ज शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में वैद्य के लिए होता था ।

धार्मिक जीवन :-

- आर्य बहुदेववाद मे आस्था रखते थे । सर्वेश्वरवाद में भी आस्था रखते थे ।
- मूर्तिपूजा नहीं करते थे ।
- मन्दिरों के साक्ष्य नहीं मिलते है ।
- सबसे प्रमुख देवता - इन्द्र
  ऋग्वेद मे 250 बार 'इन्द्र' का उल्लेख है । इन्द्र को "पुरन्दर" कहा ।
- 'अग्नि' दूसरा प्रमुख माना जाता था ।
- अग्नि को मध्यस्थ माना जाता था ।
- वरूण - तीसरा प्रमुख देवता । वरूण को 'ऋत' का संरक्षक माना जाता है ।
  ऋत - इस जगत् की भौतिक, नैतिक एवं कर्मकाण्डीय व्यवस्था को ऋत कहा गया है ।
- पुषन - पशुओं के देवता को कहा जाता था । (पूषण)
- यज्ञ अनुष्ठान होते थे ।
- धार्मिक कर्मकाण्डो का उद्देश्य भौतिक सुखों (पुत्र/पशु) की प्राप्ति करना था ।
- गायत्री मंत्र ऋग्वेद के तीसरे मंडल में उल्लेख
- सोम का पेय पदार्थ को देवता माना । ऋग्वेद के 9वें मण्डल में ।

प्रा. बहुदेववाद

↓

बहुदेववाद

↓

एकेश्वरवाद

↓

सर्वेश्वरवाद (अद्वैतवाद)

<u>हीनोथिज्म</u> – किसी स्थान विशेष पर विशेष समय एवं परिस्थितियों के कोई एक देवता प्रमुख एवं अन्य देवी–देवता गौण हो जाते हैं ।

↓

मैक्समूलर

Toppersnotes
Unleash the topper in you

उत्तरवैदिक काल – 1000 – 600 BC

- महत्वपूर्ण स्त्रोत – यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण, उपनिषद् व आरण्यक
- आर्य संस्कृति के प्रसार और विकास, उत्कर्ष, विभिन्नीकरण का युग
- लौह प्रौद्योगिकी युग की शुरूआत । ("चित्रित धूसर मृदभाण्ड")

राजनैतिक जीवन – राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था :-

- क्षेत्रगत साम्राज्यों का उदय प्रारम्भ ।
- राजा का पद पहले की अपेक्षा अधिक गौरवशाली हो गया था ।
- राजा का पद वंशानुगत हो गया था ।
- ऐतरेय ब्राह्मण मे राजा की विभिन्न उपाधियों का वर्णन मिलता है ।
  स्वराट, विराट, एकराट, सम्राट
- राजा की सहायता हेतु 12 रत्निन् होते थे ।
- राजा यज्ञों का आयोजन करवाता था ।

(i) अश्वमेध यज्ञ – यह साम्राज्यवादी यज्ञ होता था । 3 दिन तक होता

(ii) राजसूय यज्ञ – राज्याभिषेक के समय किया जाता था ।
इस दिन राजा हल चलाता था । अपने रत्निनों का निमंत्रण स्वीकार कर, उनके घर भोजन करने जाता था ।

(iii) वाजपेयी यज्ञ – रथ दौड का आयोजन करवाते थे । राजा हिस्सा लेता था व हमेशा जीतता था ।

- राजा के पास स्थायी सेना नहीं होती थी ।
- ऋग्वैदिक काल मे राजा को दिया जाने वाला स्वैच्छिक कर, अब अनिवार्य हो गया, जिसे 'बली' कहा जाता था ।(1/16वाँ भाग)
- विदथ का उल्लेख नहीं मिलता ।
- सभा, एवं समिति का प्रभाव कम हो गया था ।
- अथर्ववेद – सभा व समिति को प्रजापति की पुत्रियाँ कहा गया है ।
- पांचाल – कबीला – प्रदेश – सर्वाधिक विकसित राज्य
- राजा की "दैवीय उत्पति का सिद्धान्त" सर्वप्रथम ऐतरेय ब्राह्मण मे मिलता है ।

आर्थिक जीवन :-

- कृषि का विकास हो चुका था ।
- अथर्ववेद मे "पृथवेन्यु" को कृषि धरती पर लाने का श्रेय जाता है ।
- अथर्ववेद मे टिड्डियों का उल्लेख मिलता है ।
- शतपथ ब्राह्मण में कृषि के सभी प्रकारों (जुताई,बुआई,कटाई) का उल्लेख मिलता है ।
- शतपथ ब्राह्मण की काठक संहिता मे (24 बैलों द्वारा खिंचे जाने वाले) हल का वर्णन मिलता है ।
- गेहूँ एवं जौ प्रमुख फसले थी ।
- पशुपालन भी होता था ।
- वस्तु विनिमय होता था ।

- विनिमय मे गाय व निस्क का प्रयोग होता था ।
  निस्क – सोने का आभूषण जो गले मे पहनते थे ।
- अधिशेष उत्पादन होने लगा । (लौहा – खेत)
- अन उत्पादक वर्ग – ब्राह्मण व क्षत्रिय

उत्पादक वर्ग – वैश्य व शुद्र :-

- अधिशेष उत्पादन पर अधिकार को लेकर ब्राह्मणों व क्षत्रियों मे संघर्ष हुआ । अंततः ब्राह्मणों को प्रतीकात्मक श्रेष्ठता प्रदान की गयी एवं अधिशेष उत्पादन पर क्षत्रियों का अधिकार हो गया ।
- कृषि मे लौह निर्मित उपकरणों का प्रयोग (अन्तरजीखेडा से साक्ष्य)
- समुद्र का ज्ञान हो गया था । साहित्य मे पश्चिमी तथा पूर्वी दोनो प्रकार के समुद्रों को वर्णन मिलता है ।व्यापार व वाणिज्य का संकेत
- स्वर्ण व लौहे के अलावा टिन, तांबा, चांदी व सीसा से भी परिचित हो गये थे ।
- वस्त्र निर्माण और धातु शिल्प (धातु गलाने का काम) उद्योग बडे पैमाने पर ।

सामाजिक जीवन :-

- पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार
- चार वर्णों मे समाज विभक्त हो गया था । किन्तु अस्पृश्यता का अभाव था ।
- ब्राह्मणों को 'अदायी' कहा जाता था ।
  आरम्भ के 3 वर्ग द्विज कहलाते थे ।
  (जनेऊ धारण करते है) उपनयन संस्कार होता था ।
  द्विज – दो बार जन्म लेने वाला
- क्षुद्रो को उपनयन संस्कार का अधिकार नहीं था ।
- महिलाओं की स्थिति मे गिरावट आयी ।
  (वृहदारण्य उपनिषद मे याज्ञवल्क्य एवं गार्गी का संवाद मिलता है ।)
- अथर्ववेद मे पुत्री जन्म को दुःखदायी बताया है ।
- ऐतरेय ब्राह्मण में भी पुत्री जन्म को दुःखदायी बताया है । (पुत्री – कृपण कहा)
- मैत्रायणी संहिता मे भी पुत्री को शराब एवं जुआ की तरह बुराई बताया है ।
- महिलाओ को शिक्षा का अधिकार था । EX – गार्गी, मैत्रेयी, वेदवती
- महिलाओ को सम्पत्ति का अधिकार था ।
- विधवा विवाह का प्रचलन था हालाँकि समाज मे इसे बुरा माना जाने लगा था ।
- नियोग प्रथा का प्रचलन भी ।
- सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा का प्रचलन नही था ।
- घरेलू दासों का प्रयोग होता था ।
- जाबालोपनिषद् में चारों आश्रमों का विवरण मिलता है ।